षष्ठम् माला, खंड 24, अंक 28 गुरुवार, 29 मार्च, 1979/8 चैत्र, 1901 शक

लोक-सभा बाद-विवाद

का

हिन्दी संस्करण

(सातवां सत्र)

6th Lok Sabha

सत्यमेव जयते

[खंड 24 में अंक 21 से 30 तक है]

लोक-सभा सचिवालय

नई दिल्ली

मूल्य : बारह रुपये

विषय सूची

अंक, 28 गुरुवार, 29 मार्च, 1979/8 चैत्र, 1901 (शक)

निधन संबंधी उल्लेख

श्री एच० एल० पटवारी का निधन

अध्यक्ष महोदय

श्री मोरारजी देसाई

श्री सी० एम० स्टीफन

श्री यशवंतराव चव्हाण

श्री समर मुखर्जी

श्री ए० अशोकराज

श्रीमती पार्वती कृष्णन्

प्रो० पी० जी० मावलंकर

श्री चरण नरजरी

श्री अब्दुल अहद वकील

श्री कचरु लाल हेमराज जैन

लोक सभा

गुरुवार, 29 मार्च, 1979/8 चैत्र, 1901 (शक)

लोक सभा ग्यारह बजे समवेत हुई ।

[अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए]

निधन सम्बन्धी उल्लेख

अध्यक्ष महोदय: माननीय सदस्यगण, सभा को श्री एच०एल० पटवारी, जो इस सभा के वर्तमान सदस्य थे, के अकस्मात निधन के बारे में पता ही है। उन्हें अचानक दिल का दौरा पड़ा और 26 मार्च, 1979 को उन्हें डा० राम मनोहर लोहिया अस्पताल में दाखिल किया गया। 28 मार्च, 1979 को उनका निधन हो गया ।

श्री पटवारी आसाम के मंगलदाई निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रहे थे । लोक सभा में आने से पूर्व 1957 से 1962 तक तथा पुनः 1967 से लेकर 1972 तक वह आसाम विधान सभा के सदस्य रहे । वह राज्य विधान सभा में विपक्ष के मुख्य सचेतक थे ।

वह एक अच्छे संसदविद् थे और इस समय गैर-सरकारी सदस्यों के विधेयकों तथा संकल्पों संबंधी समिति के सदस्य थे ।

उनकी शिक्षा में गहरी रूचि थी और उन्होंने 1957 से 1968 तक आसाम प्राथमिक शिक्षक संघ के और 1961 से 1972 तक अखिल भारतीय प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष के रूप में काम किया। उनका कई शैक्षणिक संस्थाओं तथा किसानों और समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान के लिए कार्य करने वाले अन्य संगठनों से संबंध था ।

हमें अपने इस मित्र के निधन पर गहरा शोक है और मुझे आशा है कि शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करने में यह सभा मेरा साथ देगी ।

प्रधान मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) :जब मैंने दो दिन पूर्व यह समाचार सुना कि श्री पटवारी को घातक दिल का दौरा पड़ा तो उससे मुझे बहुत सदमा पहुंचा । जब मैं उन्हें मिलने गया तो वह उस समय चेतनावस्था में थे और उन्होंने मेरे साथ बातचीत की । मैंने सोचा कि वह स्वस्थ्य हो जायेंगे किन्तु ईश्वर को ऐसा मंजूर नहीं था और वह इस घातक दिल के दौरे के कारण चल बसे ।

वह इस सभा के सक्रिय सदस्य थे और सार्वजनिक जीवन में वह कई वर्षों तक सक्रिय रूप से कार्य करते रहे। उनकी शिक्षा में बहुत रूचि थी और काफी समय तक वह अखिल भारतीय प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष भी रहे । उनकी समाज के कमजोर वर्गों तथा उनके उत्थान में भी अत्यधिक रूचि थी और इसलिए उन्होंने आसाम में ग्रामीण लोगों के उत्थान हेतु भरसक प्रयास किया । उनके निधन से हमने एक महान सामाजिक कार्यकर्ता और इस सभा का एक सक्रिय सदस्य खो दिया है ।

हमें उनके निधन पर गहरा शोक है और अपनी ओर से तथा सभा की ओर से मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप हमारी संवेदनाएं तथा सहानुभूति शोक संतप्त परिवार को प्रेषित कर दें ।

श्री सी० एम० स्टीफन (इदकी) : हमारे एक प्रिय साथी के निधन पर व्यक्त किए गए विचारों तथा संवेदनाओं से मैं सहमत हूं । आपने उनके सार्वजनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं के बारे में विस्तार से कहा है । मैं उन बातों को दोहराना नहीं चाहता । श्री पटवारी में मैंने जो एक खास बात देखी वह यह थी कि वह बहुत मिलनसार व्यक्ति थे । इस सभा में कुछ ऐसे सदस्य हो सकते हैं जिन्हें सब नहीं जानते होंगे किन्तु श्री पटवारी एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें इस सभा के सभी सदस्य भली-भांति जानते थे । उनके स्वभाव तथा व्यवहार से प्रत्येक सदस्य परिचित था । सभा की कार्यवाही के दौरान वह जिस ढंग से बोलते थे, वह सर्वविदित है । वह प्रत्येक के साथ बिना किसी हिचकिचाहट के मिल जाते थे । वह केवल शिक्षा के ही क्षेत्र में सक्रिय नहीं थे बल्कि अध्यापकों के आन्दोलन में भी उन्होंने विशेष रूप से सक्रियता दिखाई । उन्होंने अपनी संसदीय गतिविधियों तथा गैर-संसदीय गतिविधियों के दौरान अध्यापक वर्ग की महान सेवा की । उनके निधन से हमने एक अच्छा व्यक्ति, एक अच्छा संसदविद् और एक परममित्र खो दिया है ।

मैं सभा के शेष सदस्यों के साथ शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी गहरी सहानुभूति प्रकट करने और उसे उन तक प्रेषित करने के लिए आपसे अनुरोध करता हूं ।

श्री यशवंत राव चव्हाण (सतारा) : अध्यक्ष महोदय मैं और मेरा दल सभा के नेता तथा आप द्वारा श्री पटवारी के निधन के बारे में व्यक्त की गई संवेदनाओं तथा दुख में सम्मिलित हैं । अपनी गतिविधियों के कारण श्री पटवारी सभी दलों और सभी सदस्यों में भली-भांति जाने जाते थे । उनका सार्वजनिक जीवन बहुत लम्बा था । वह कमजोर वर्गों के समर्थक थे । उन्होंने प्राथमिक अध्यापकों तथा स्थानीय मजदूरों के कई संघों का गठन किया । वह बहुत लम्बे समय तक विधायी क्षेत्र में रहे । मेरा ख्याल है कि वह दो बार आसाम विधान सभा के सदस्य रहे और कुछ समय के लिए वह अपने दल के उप मुख्य सचेतक भी रहे। पिछले दो वर्षों से वह इस सभा के सदस्य थे और वह एक सर्वप्रिय व्यक्ति थे । निःसन्देह उनके निधन से हम सब को भारी क्षति पहुंची है । यह क्षति केवल जनता पार्टी और उनके समर्थकों को ही नहीं हुई है । मैं समझता हूं कि यह तो एक राष्ट्रीय क्षति है । वह एक सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता थे । उनका सार्वजनिक जीवन से निकल जाना स्वाभाविक रूप से एक राष्ट्रीय हानि है और हम भी इस हानि में सहभागी हैं ।

श्रीमान मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप हमारा दुख तथा संवदना शोक संतप्त परिवार के सदस्यों को प्रेषित कर दें ।

श्री समर मुखर्जी (हावड़ा) : अपने दल की ओर से मैं श्री पटवारी के अकस्मात निधन पर व्यक्त की गई संवेदनाओं से सहमत हूं । यद्यपि मेरी उनसे जान पहचान नहीं थी तथापि उन्होंने सभा में सभी वाद-विवादों में जो अत्यधिक रूचि तथा उत्सुकता दिखाई उससे उन्होंने अपने आप को एक विशिष्ठ व्यक्ति सिद्ध कर दिया था । और जब मुझे अब पता चला है कि एक विधायक के रूप में वे बहुत लम्बे अर्से से कार्य कर रहे थे और वह एक अच्छे सामाजिक कार्यकर्ता थे, तो यह स्वाभाविक ही है कि जिन संगठनों तथा जिन लोगों से उनका संबंध था उनको उनके निधन से अत्याधिक हानि पहुंची होगी । यह क्षति केवल उन्ही तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक राष्ट्रीय क्षति भी है ।

मैं आपसे निवेदन करता हूं कि आप हमारी संवेदनाएं शोक संतप्त परिवार को प्रेषित करने की कृपा करें ।

श्री ए० अशोकराज (पेरम्बलूर): मैं अखिल भारतीय अण्णाद्रमुक की ओर से श्री थीरू पटवारी के दुखद निधन पर शोक व्यक्त करता हूं । जहां तक मेरा संबंध है, यद्यपि मैं उनके साथ कोई सम्पर्क स्थापित नहीं कर सका तथापि मैंने उनकी गतिविधियों और मानवीय भावनाओं को देखा है। उस दृष्टि से मैंने उन्हें एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा है जिसमें मानव के सभी गुण मौजूद थे ।

अतः आपसे अनुरोध है कि आप हमारे दल की ओर से उनके परिवार के प्रति हमारी संवेदनाएं तथा सहानुभूति प्रकट करने की कृपा करें ।

श्री पार्वती कृष्णन् : (कोयम्बटूर): श्री पटवारी के प्रति जो संवेदनाएं व्यक्त की गई हैं उनमें मैं भी सम्मिलित हूं । हम देखते थे कि वह सभा में उपस्थित रहते थे तो कितनी सक्रियता से विभिन्न विषयों पर होने वाली चर्चाओं में भाग लिया करते थे । वे ऐसे-ऐसे मामले उठाते थे जिनका संबंध न केवल उनके ही निर्वाचन क्षेत्र से होता था बल्कि वे मामले विभिन्न क्षेत्रों के बारे में भी हुआ करते थे ।

श्रीमान्, मुझे पता है कि उन्होंने इस देश के अध्यापकों की दशा को सुधारने में अत्यधिक रूचि ली । वह एक अखिल भारतीय सम्मेलन के आयोजन में व्यस्त थे । श्रीमान् कोई भी इस बात को नहीं भूल सकता कि वह जब कभी किसी कार्य को आरम्भ करते थे तो उसे पूरा करने के लिए अथक प्रयास किया करते थे । वह खूब हंसी-मजाक किया करते थे । और संसद में या उससे बाहर किसी भी समय किसी भी मामले पर चाहे कितनी ही गर्मागर्म बहस क्यों न हो रही हो, वह उसमें हंसी-मजाक का पुट डाल दिया करते थे । वह सभी सामाजिक विषमताओं तथा सभी प्रकार के शोषण और दमन के उन्मूलन के समर्थक थे । और मैं इस बात को नहीं भूल सकती कि वह इस देश में महिलाओं को समान दर्जा दिलाने के लिए कितने कट्टर थे । अतः इस संबंध में मैं उनका विशेष सम्मान करती हूं और उनके परिवार के प्रति संवेदनाएं और सहानुभूति प्रकट करती हूं ।

प्रो०पी०जी० मावलंकर (गांधीनगर): अध्यक्ष महोदय, आपके द्वारा तथा सभा के अन्य सदस्य द्वारा श्री पटवारी के निधन पर जो संवेदनाएं प्रकट की गई हैं उनमें मैं आपके साथ हूं । वह हमारे प्रिय साथी थे । उन्होंने प्राथमिक शिक्षक के रूप में अपना जीवन आरम्भ किया । चूंकि मैंने भी तीन दशकों से अधिक समय अध्यापन के क्षेत्र में बिताया है अतः मैं समझता हूं कि मैंने अपना एक शिक्षक साथी तथा भाई सरीखा मित्र खो दिया है ।

श्रीमान्, पटवारी जी निर्धन- लोगों के लिए बहुत चिंतित रहते थे और इसीलिए सार्वजनिक जीवन तथा संसदीय जीवन में कई मामलों पर वे बहुत संवेदनशील हो जाया करते थे । और जैसा कि पार्वती जी ने कहा है कि उनके अधिक कार्य करने से उन्होंने अपनी मृत्यु अधिक निकट ला दी । उनके निधन पर हमें अत्यधिक दुख है । अपने मृदु स्वभाव तथा अन्य गुणों के कारण वह सबके प्रिय हो गए थे ।

श्रीमान् मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप शोक संतप्त परिवार के सदस्यों को हमारी हार्दिक संवेदनाएं प्रेषित करने की कृपा करें ।

श्री चरण नरजरी (कोकराझार): अध्यक्ष महोदय अपने मित्र श्री पटवारी के अकस्मात निधन पर शोक प्रकट करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है । उनके निधन से देश ने एक महान देशभक्ति

वाला सपूत खो दिया है । वह आसाम के सभी वर्गों के लोगों में प्रिय थे । उनका मैदानी इलाकों में रहने बाले आसाम के जनजाति के लोगों के साथ दीर्घकाल तक जो सम्बन्ध रहा और उनके प्रति श्री पटवारी जी का जो स्नेह रहा, उसे वहां के लोग सदैव याद रखेंगे । आसाम विधान सभा के सदस्य के रूप में उन्होंने जो कार्य किया था वह सराहनीय है और इस संसद भवन में उनकी उपस्थिति सबको महसूस होती थी । एक बात जिसे शायद माननीय सदस्य नहीं जानते हों, वह यह थी कि श्री पटवारी ने बिना किसी आश्रय तथा सहायता के शिक्षा प्राप्त की और उन्होंने अपने बल बूते पर इतनी उन्नति की । वह साधारण जीवन व्यतीत करते थे और सब लोग उनके साथ आसानी से हिलमिल जाते थे जिसके कारण वह सर्वप्रिय बन गए ।

जैसा कि हम सब जानते हैं कि वह सभा में बहुत सक्रिय रहते थे और शिक्षा को समवर्ती सूची में रखे जाने के लिए उन्होंने बहुत योगदान दिया । उनके निधन से अखिल भारतीय प्राथमिक शिक्षक संघ को अत्यधिक क्षति पहुंची है । मैं आपके माध्यम से अपनी ओर से तथा आसाम के लोगों की ओर से विशेषकर वहां के मैदानी क्षेत्रों के जनजाति के लोगों की ओर से शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदनाएं तथा सहानुभूति व्यक्त करता हूं । इन शब्दों के साथ अपनी संवेदनाएं व्यक्त करने में मैं प्रधान मंत्री का साथ देता हूं ।

श्री अब्दुल अहद वकील (बारामूला): पटवारी साहब को मैं जानता था । मेरी उनके साथ वक्तन-फवक्तन बातें भी हुई हैं । जिन खयालात के इजहार जनाबे प्राइम मिनिस्टर साहब और बाकी रहनुमाओं ने यहां किए हैं उनके अलावा उन्हें हमारी कौमी जिन्दगी के साथ, बुनियादात के साथ, बुनियादी उसूलों के साथ इतनी मुहब्बत थी कि कोई भी वाका जो मुल्क में होता था और अगर वह हमारे बुनियादी उसूलों, इंसानी कद्रों, इंसानी भाईचारे, जम्हूरियत और इंसानी बराबरी के उसूलों के लिए खतरा पहुंचाने वाला होता था चाहे वह किसी भी क्वार्टर से हो, किसी हरकत से हो तो उनके दिल को बड़ा रंज पहुंचता था । चुनाचे उन्होंने मुल्क को बुनियादी तौर पर मजबूत करने के लिए जो जजबात पैदा किए वे मुहब्बत भरे है मुल्क के लिए, कौम के लिए और इस नाते मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से और जम्मू काश्मीर के अव्वाम की तरफ से उन खयालात और जजबात से अपने आपको वाबस्ता करता हूं जिन का इजहार यहां किया गया है और आपकी वसातत से उनकी फैमिली तक उन जजबात को पहुंचाने के लिए आप से दरख्वास्त करता हूं ।

श्री कवरुलाल हेमराज जैन (बालाघाट): मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से श्री हीरा लाल पटवारी –नाम हीरा था और वह थे भी हीरा– के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं । 24 तारीख को मेरी उनके साथ चर्चा हुई थी यहां । कल अचानक जब उनके स्वर्गवास का समाचार सुनने को मिला तो बहुत सदमा पहुंचा । खास तौर से भारतीयता उनके अन्दर कूट-कूट कर भरी हुई थी । राजस्थान में उनका जन्म हुआ था और असम में उनका राजनीतिक जीवन विकसित हुआ और जो ख्याति उन्होंने पाई, आज वह भुलाई नहीं जा सकती है । उनके द्वारा किए गए काम इस देश के लिए एक यादगार बन कर रहेंगे ।

प्रधान मंत्री जी और हमारे अन्य नेतागण ने जो संवेदना के विचार प्रकट किए है उनसे मैं अपने आपको और अपनी पार्टी को सम्बद्ध करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि उनके शोक संतप्त परिवार तक इस दुखद अवस्था में हमारी संवेदनाओं को पहुंचाने की कृपा करें ।

अध्यक्ष महोदय: प्रो० दिलीप चक्रवर्ती बोलना चाहते थे । किन्तु परम्परा यह है कि इसमें केवल दलों के नेता ही भाग लेते हैं ।

सभा दिवंगत आत्मा के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए कुछ क्षण मौन खड़ी होगी ।

(इसके पश्चात् सदस्यगण कुछ क्षण मौन खड़े रहे)

दिवंगत आत्मा के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए सभा कल 11 बजे तक के लिए स्थगित होती है।

(मध्याह्न पूर्व 11.20 बजे)

तत्पश्चात् लोक सभा शुक्रवार, 30 मार्च,1979/9 चैत्र,1901 (शक) के 11 बजे तक के लिए स्थगित हुई ।